

કુષ્ઠરોગ ચિકિત્સા.



લેખક અને પ્રકાશક
રાજવૈદ્ય એસ. એમ. રામા.
કુષ્ઠરોગ સ્પેશ્યાલિસ્ટ.
સાંકડી શેરી—અમદાવાદ.

પ્રથમાવૃત્તિ

સને ૧૯૩૦

પ્રત ૫૦૦

સંવત ૧૯૮૭

૦-૨-૦

અમદાવાદ-બી હાયમંડ બ્યુઝિલિ પ્રિન્ટિંગ પ્રેસમાં
પરીખ દેવીદાસ હમતલાલે છાપ્યું.

ગુજરાત વિદ્યાપીઠ ગ્રંથાલય
અમદાવાદ
ગુજરાતી કૉપીરાઈટ-સંગ્રહ
૧૫૫૫

ગૂજરાત વિદ્યાપીઠ ગ્રંથાલય

[ગુજરાતી કૉપીરાયિટ વિભાગ]

અનુક્રમાંક ૧૫૫૬૪ વર્ગિક

પુસ્તકનું નામ કુષ્ઠરોગ ચિકિત્સા

વિષય હૃદય : ૪ શ્લોક : ૬

अहमदाबाद वैद्यसभाके प्रमुख



वैद्यराज एम. एम. शर्मा

कृष्णराजक. स्वर्णपत्रिका

પ્રસ્તાવના.

યહ આયુર્વેદ શાસ્ત્ર ભારતવાસિયોંકે કષ્ટ દૂર કરને ઓર શરીરકો સ્વસ્થ રખનેકા એક મહાસાગરકી સમાન વિશદ ઓર વિશાલ તથા મહા ગમ્ભીર અમૃતકા ભણ્ડાર હૈ. દેવાસુર સંગ્રામમે દેવતાઓંને ને અમરત્વ કો પ્રાપ્ત કિયા થા વહ ઇસ આયુર્વેદકા પ્રતાપ થા. ઇસી સુધાસાગરકા રસપાન કરકે પ્રાચીન આર્યજાણુ દીર્ઘાયુ ઓર બલવાન હોકર સ્વાસ્થ્યમય જીવનકા સંભોગ કરતે થે. યહ આયુર્વેદીય ચિકિત્સા સમ્પૂર્ણ ચિકિત્સાઓંકી મૂલ હૈ, ઓર ઇસી ચિકિત્સાકા સખ ભારત તથા અન્ય દેશોમે પ્રચાર થા-ઇસ આયુર્વેદીય ચિકિત્સાકી કલાંતક પ્રશંસા કી જાય. યહ રામબાણુકી સમાન કાર્ય સિદ્ધ કરને વાલી હૈ, યહ તો સખહી છોટોં બડો કો મુક્ત કરકસે સ્વીકાર કરના પડેગા, હમારી આયુર્વેદીય ચિકિત્સાહી પુરાને આર કઠિન મહા બયાનક રોગોંકે સમૂહકો શમન કર સકતી હૈ, ઇસમેં કિચિન્માત્ર ભી સન્દેહ નહી, ઇસ દેશકે મનુષ્યોંકે સ્વભાવાનુકૂલ ઇસી દેશકી ઔષધિ હૈ, દુસરે દેશકી કદાપિ સ્વભાવાનુકૂલ નહીં હો સકતી, વરન્ ભારતવાસિયોં કે લિયે ઇસ દેશકી ઔષધિ કમ્પાણુકારી ઓર કષ્ટહારી હૈં હી પરન્તુ ઓર દેશોં કે લિયે ભી પરમ હિતકારી હૈ. ઓર આપ યહ નિશ્ચય જન લેનાકી, ઇસ આયુર્વેદ ત્રિદા કો જુલ ભારત જુમિ હી હૈ, પીછે ઓર દેશોમે પ્રચાર હુઆ, હિન્દુ રાજાઓં કે સમય કે સમય ભારતવર્ષ મેં સમ્પૂર્ણ વિદ્યાઓંકી અર્થો થી, પરન્તુ જળસે દુર્ભાગ્યવશ્વ મુસલમાનોંને ઇસ દેશ પર અધિકાર કિયા તખસે પ્રાપ્ત: આયુર્વેદીય ચિકિત્સાકા સમ્પૂર્ણ લોપ હો ગયા, થોડે હી સમય મેં કયા સે કયા હો ગયા, પરમેશ્વર કી ગતી કુજ જાની નહીં જાતી, જળ મુસલમાનોંને અધિક અન્યાય કરના શુરુ કિયા તો પરમાત્માને ભારત સે જનકા રાજ્ય મારત કિયા, જળ ભારત વાસિયોંકે કુજ દિન ફિર, ઓર નારાયણુને અપની દયા કી, તો ફિર સે આયુર્વેદ કા પ્રકાશ ભરતખંડ મેં હુઆ, ઓર એક દિન ફિર એસા આવેમાતમ પૂર્વવત્ સમ્પૂર્ણતા સે આયુર્વેદહીકા પ્રચાર હોગા. બન્ધુઓ! આયુર્વેદ કે પ્રાચીન ગ્રન્થોમે પ્રત્યેક રોગ કે લિયે એક સે એક બઢકર હજારોં પ્રયોગ મૌજૂદ હૈ ઓર જહાં તક મેરા અનુભવ હૈ મેં વિશ્વાસપૂર્વક કહ સકતા હુંં કિ ચરક સુશ્રુત વાગ્બટાદિ પ્રામાણિક પ્રાચીન ગ્રન્થોમે અધિકાંશ પ્રયોગ રામબાણુ કે સમાન અકસીર કામ કરતે હૈં ઓર ઇન્હી પ્રયોગોં મેં સે ઇસ સેવકને ભી ગુરુ કૃપાસે ઇસ દુષ્ટ વ્યથા કા પ્રયોગ પ્રાપ્ત કિયા હૈ.

મુઝે અપની યૌગ્યતા પર તનિકભી બરોસા નહિ હૈ. ઓર ઇસમેં ત્રુટિયોં કા હોના તો સ્વાભાવિક હી હૈ પરન્તુ મુઝે ઇસકી જરાભી ચિન્તા નહીં હૈ, કમોં કિ મુઝે વિશ્વાસ હૈ કિ જળ ગ્રેમ સે વેદ બન્ધુઓં કો યહ તુઝ બેટ સમર્પિત કર રહા હુંં. ઉસકા અનુભવ વે અવશ્ય કરેંગે ઓર હંસમતિસે ઇસકે નિરુપયોગી અંશકો દષ્ટિમયુત કરતે હુઝે કેવજ ઉપયોગી અંશકો હી ગ્રહણ કરેંગે. ઇતિ.

* વૈદ્યરાજ એસ. એમ. શર્માએ અમદાવાદ વેદ સભામાં વાંચેલા નિબંધ, વૈદ્યરાજ એસ. એમ. શર્મા ખાસ દૃષ્ટિરેખના સ્પેશીયાલીસ્ટ છે અને તેમના હાથે ઘણાં દરદીઓને લાભ મળ્યો છે.

कुष्ठरोग.

आरोग्य शरीर संयंघी नीयमो के पालन करते रहनेकी ही अवस्था विशेष का नाम है, इस लिये सुअपूर्वक ज्वन व्यतीत करनेकी धृच्छा रखनेवाले प्रत्येक मनुष्यको उचित है कि शरीर को लाभदायक और हानिकारक पदार्थों और कर्मोंका ज्ञान प्राप्त कर अहितकर पदार्थों और कर्मोंसे सदा अपनेको अयाता रहे, अन्यथा मिथ्या आहार विहारादि शरीरमें दोषों के साम्यावस्थामें हलयत्र उत्पन्न कर उसीके अनुसार नाना प्रकार के वे रोगोंके कारण बन गइतेहैं जैसे:—

कुष्ठ रोग होने के कारण और निदान.

- (१) दूध भ्रष्टी परस्पर विरुद्ध भोजन करने से.
 - (२) दही और दूध परस्पर विरुद्ध पदार्थ आने से.
 - (३) पतले बिकने और भारी पदार्थ जल आने से.
 - (४) वमन तथा मद्यभूनादि के वेगों का रोकने से.
 - (५) अधिक भाकर कसरत (व्यायाम) करने से.
 - (६) अधिक भाकर धूप वा आगका अधिक सेवन करने से.
 - (७) सर्दी मर्मी लघन और आहार घनका जिना कमसे सेवन करने से.
 - (८) पसीने आये हुये, श्रमसे थके हुये और लक्ष्मसे धलराजे हुये घन तीनों अवस्थामें तत्काल नहाने तथा जलपान करने से.
 - (९) अजर्ण में आने या भोजन पर भोजन करने से.
 - (१०) वमन विरेचनादि पत्र्य कर्मोंका सेवन करते समय कुपथ्य करने से.
 - (११) नवीन अन्न दही भ्रष्टी (दूध भ्रष्टी) आदि नमक और अत्यन्त अम्ल सेवन करने से.
 - (१२) उड, भूली, पिष्ठात, तिल, दूध, गुड घनका अधिक सेवन करने से.
 - (१३) भोजन के अजर्ण में त्री प्रसंग करने से.
 - (१४) दिन में जल सोने से.
 - (१५) तिलतैल कुलिथाय, वल्मीक लिंग मेवच माहिषं दधि वृन्ताकं संतते कुष्ठ हेतवः तिल, तेल, कुन्नी, वल्मीक रोग, विज रोग (उपदेश आदी, बैंसका दही और वृन्ताक, घन सात काष्ठों से भी कुष्ठ उत्पन्न होते हैं.
 - (१६) घनके सिवाय वातरक्त तथा पारद के विकारसे कुष्ठ रोग होता है.
 - (१७) घनके सिवाय बालु जमाने के छोटोमोमें आनेसे तथा विदेशी औषधियों के अधिक सेवन करने से कुष्ठरोग दिन या दिन बढ़ता जाता है.
- कुष्ठ की सम्प्रति और संख्या घन उपर लिखे हुये कारणों से वातपित्त और कफ ये तीनों दोष कुपित होते हैं, ये कुपित हो कर त्वचा, मांस, रक्त व लसीका को दूषित करते हैं. इस प्रकार तीनों दोष और सात त्वचादि दूष्य ये सात कुपित होनेसे सात और (११) प्रकार प्रकार के कुष्ठ रोग का उत्पन्न करते हैं.
- कुष्ठ की संख्या अष्टादश हैं, घनमें से सात महा कुष्ठ और ग्यारहः सुक्ष्म कुष्ठ हैं.

सात भद्रकुण्डों के नाम.

कपाल, औदुम्बर, भद्रक, सिन्धु, काकलु, कलु, पुण्डरीक और ऋक्षजिह्वक.

चारह क्षुद्र कुण्डों के नाम.

ऐककुण्ड, गजयर्म, यर्महल, वियचिका, विपादिका, पाभा, कच्छ, हद्र, विरहोटक, कटिल और अलस.

कुष्ठ के पूर्वरूप.

जिस जगह कुष्ठ होने को होता है, वह स्थान छूनेसे अत्यन्त चिकना व, अत्यन्त भरभरा भालुम होता है। वहां पसीने अधिक आवें, वा मित्रकुष्ठ नहीं आवे, उस जगह के यमडेका रंग अदृश जग, दाल होय, भुजली हो, त्वचा को स्पर्श करने से स्पर्श भालुम न हो, सुष्ठ युमाने की सी पीडा हो, ददरे हो, मिता श्रम किये श्रम भालुम हो ! प्रलु में अधिक वेदना हो, प्रलु शीघ्र उत्पन्न हो, और बहुत दिन तक रहें, प्रलु के बनने के समय रूपा होता है, अल्प कारणों से कुपित हो जग, रोमांच हो आवे और रुधिर काला हो जग, ये सर्व कुष्ठ के पूर्वरूप है।

किस दोष की उत्पत्तिता से कौनसा कुष्ठ उत्पन्न होता है.

(१) कपाल कुष्ठ वातकी उत्पत्तिता से होता है.

(२) औदुम्बर, भद्रक और वियचिका पित्तकी उत्पत्तिता से होते हैं.

(३) ऋक्षजिह्वक वायु और कक्ष की उत्पत्तिता से होता है.

(४) गजयर्म, ऐककुण्ड, कटिल, सिन्धु, अलस और विपादिका वात और कक्ष की उत्पत्तिता से होते हैं.

(५) हद्र, शतारु, पुण्डरीक, विरहोटक, पाभा और यर्महल कुष्ठ पित्त और कक्ष की उत्पत्तिता से होते हैं.

(६) काकलुक तीनों दोषों की उत्पत्तिता से होता है.

नाम कोट	नाम प्रधान दोष
कपाल	वात
औदुम्बर, भद्रक, वियचिका	पित्त
ऋक्षजिह्वक, गजयर्म, ऐककुण्ड, कटिल, सिन्धु, अलस, और विपादिका.	वात और कक्ष
हद्र, शतारु, पुण्डरीक, विरहोटक, पाभा और यर्महल	पित्त और कक्ष
काकलुक	वात, पित्त और कक्ष

कुण्डों के लक्षण.

(१) कपास कुण्ड के त्रय काले लाल रंगे, कटिन और पतली त्वचा वाले तथा नोचने सरीपी पीडा सहित होता है.

(२) औदुम्बर कुण्ड में पीडा दाह वाली और पुण्डी होती है व्याधि स्थान के शोथे पिङ्गल वर्ण के होते हैं इस कुण्डका आकार गुलर के समान होता है इसी से इसको औदुम्बर के नाम से कहते हैं.

(३) मण्डल कुण्ड का रंग कुछ सफ़ेद और लाल रंगका हो जे कटिन, गोद, चिकना तथा जिसका आकार मण्डल के समान हो और ओके दूसरे से मिला हुआ हो.

(४) ऋक्षन्दि कुण्ड के किनारे लाल हों, भीयमें काला और लाल मिले हुआ रंग का हो, कर्कश पीडा सहित और रीछ की छल की समान आकारवाला हो.

(५) पुण्डरीक कुण्ड सफ़ेद कमलके समान भीयमें लाल और किनारे सफ़ेद हो, कुछ विस्त्राप्त सहित हो. इसमें कङ्क प्रधान है.

(६) सिद्ध कुण्ड के मण्डल, सफ़ेद और लाल तथा पतले हों, पुण्णनेसे लुसीसी उठे तुम्भीके झलकी समान और प्रायः छातीमें होता है.

(७) काकलुक कुण्ड धुँधलीका समान लाल और काले भुजवाला होता है तथा पाक और तीव्र पीडा युक्त और तीनों दोषों के लक्षणयुक्त होता है.

(८) आरुह क्षुद्र कुण्डों के लक्षण ओकेकुण्ड और यर्म कुण्ड, जिसमें पसीने नहीं आवे जे बहुत जगह में व्याप्त हो, जे मछली की त्वचा के समान हो, जिसकी त्वचा हाथीकी यर्म के समान मोटी और कर्कश हो, सुश्रुत में कहा है कि "कृष्णारणं येन भवेच्छरीरं तेदक कुष्ठं प्रवदन्त्यसाध्यं अर्थात्, जिससे देह काला व लाल पड जाता है उसे ओकेकुण्ड कहते हैं यह असाध्य है.

(९) कटिभ कुण्ड जे कुण्ड वाली लिये काला जिसमें गोद गोद चकते पडकर उरने लगे और अत्यन्त पुण्डी हो.

(१०) विपादिका में पुण्डी जलन और वेदना होती है, जग विचित्रिका पैरोंमें होती है तथ इससे विचित्रिका नडी परन्तु विपादिका कहते हैं, बोकमें विवाध कहते हैं.

(११) अलसक जिसमें पुण्डी खलती हो और वालीयुक्त छोटी तथा गरी पुंसिये अधिक हो.

(१२) ह्रुमण्डल जे पुण्डी युक्त और ताम्र त्रय की पुंसिये युक्त हो, ईशता जग और मण्डलाकार गोद चकते हो.

(१३) पाभा जिसमें शरीर में पुण्डी खलकर छोटी छोटी पुंसियां निकल आवे यारों और आग जलनेकी सी दाह मालुम पडे, पिवलरकर और और जगह लगने से वहां भी पुंसियां उत्पन्न हो आवे.

(१४) यर्मद्व कुण्ड जिसका रंग लाल, जिसमें श्व, पुण्डी और डोडा से युक्त हो कर यर्म इट जग और किसी पदार्थ का भी स्पर्श सहा न जग.

(१५) कम्बु कुण्ड कुंसां, हाथ, पांव पर जे दाहयुक्त छोटी छोटी पुंसियां अथवा गरी गरी पुंसियां हो.

(१६) विरहोदक कुष्ठ जिसमें दोड़े कावे या लाकचम के हो और जिसकी त्वचा पतली हो।

(१७) शलाक कुष्ठ जिसमें लाकच कावे दाहयुक्त अहुतसे पाये दे।

(१८) विचरिका जिसमें पुण्डरी युक्त धूसर रंग का और श्लेष्मयुक्त कुष्ठिकां हो।
समे धातुगत कुष्ठों के लक्षण

रसगत कुष्ठमें रूप कुरूप हो जय, शरीरमें रूपापेन त्वचा ग्रन्थ हो जय, रोगांश का होना और पसीना अधिक आवे।

रक्तगत कुष्ठ अगर कुछ भूनमें यक्ष्मा जाता है तो पुण्डरी अहुत यक्ष्मा है और राव अधिकता से कहे।

भासगत कुष्ठ में मुष्का अधिक सूचना शरीरमें कंकषता देहमें अधिक पुंसियां हो सुप्त युमानेकी सी पीडा हो और दोड़े हो और स्थिरता होती है।

मेदगत कुष्ठ में लाय टेडे हो जय, यज्ञनेमें असमर्थ हो जय, अंग लंग हो जय, धाव द्रव जय।

अस्थि भग्नगत कुष्ठमें नाकका गैठ जना-आंभे लाव हो जय, धावमें कृमि पूड जय और स्वरलंग हो जाता है।

शुक्रगत कुष्ठमें जय कुछ शुक्रमें प्रवेश करता है, तत्र हाथका गिर पडना यधनेकी क्षति का नष्ट होना, अंगमें पीडा होना, धाव का अत्यन्त बढ़ना शुक्रातवगतकुष्ठ विष और रज में धुसा हुआ कुष्ठ सन्तानको भी काढी करता है यानी काढीके औषाध नीकाढी होती है।

कुष्ठ में सताहि होणे की उत्पत्ति वातसे रूपा और लाव होता है।

पित्तसे कुष्ठ अदभुत अत्यन्त जीवा दाहलावी और आव संयुक्त होता है।

कइसे सईध धन (मोटा) लारी और पुण्डरी युक्त होता है।

जिसमें उपर लिखे दुअे लक्षणोंमेंसे दो प्रकारके लक्षण हो उसे दो दोष की उत्पत्ति वादा और जिसमें तीनों प्रकार के लक्षण हो उसे तीनों दोषों का उत्पत्ति वादा समझे।

साध्यासाध्य लक्षण

रस, रुधिर और भास में गया हुआ तथा वात और कइ की उत्पत्ति वादा कुष्ठ साध्य है।

मेदगत और दाहज कुष्ठ याध्य है। भग्न, अस्थि और शुक्रगत कुष्ठ असाध्य है।

जिस कुष्ठमें कृमि पड जय, वमन और भेदगिन आदि उपद्रव हो और ने त्रिदोषोत्पन्न हो वह असाध्य है।

कुष्ठमें अरिष्ट लक्षण

जो काढ दूटकर वहता हो, जिसमें रोगी के नेत्र लाव हो गये हो या स्वरलंग हो गया हो और जिसमें वमन विरेचनादि कुछ लाव नही करते वह रोगी भर जाता है।

शिवत्र कुष्ठ के लक्षण

शिवत्र कुष्ठ के शिवत्र होनेका कारण पूर्वोक्त कुष्ठों के समान ही है।

शिवत्र के दो भेद है। शिलाश और अरुण।

जन्म स्वित्र श्चिर के आश्रय से रहता है तब किंवाश कहता है और जन्म मांस के आश्रय से रहता है तब अशु कहते हैं।

कुष्ठ और (किंवाश) स्वित्र में वेद कुष्ठ टपकता है पर स्वित्र नहीं टपकता है कुष्ठ पित्त और कृत्तियों दोषों के प्रकोप से होता है पर स्वित्र, कुष्ठ एक दोष से होता है कुष्ठ रसादि सभक्त पित्तुओं में रहता है परंतु स्वित्र श्चिर मांस और मेद में रहता है कृष्ण कोट और श्वेत में वेद है।

दोष वेद से लक्षण वेद.

पित्त से पैदा हुआ स्वित्र किसी कहर बाध होता है और श्चिर में रहता है।

पित्त से पैदा हुआ स्वित्र अन्त में बाध होता है और मांस में रहता है।

कृष्ण से पैदा हुआ स्वित्र सफेद होता है और मेद में रहता है।

उत्तरोत्तर एक से एक भारी है।

स्वित्रकी साध्यासाध्यता.

जिस स्वित्र में रोग काणे हो, पतला श्चिर युक्त तत्काण का नया हो-तथा आगसे जल कर न हुआ हो वह साध्य है, इससे अत्रावा अन्य स्वित्र असाध्य है. निर्वोम रक्षान-विर्ज योनी हाथ-पैर के तलवों और होठों में पैदा हुआ स्वित्र भी असाध्य है.

कुष्ठ रोगीका संसर्ग निषेध.

मैथुनादि संसर्ग से, क्षीर से शरीर स्पर्श होने से, श्वास के मिश्रण से-एक साथ लोणम करने से, एक शय्यापर सोने से, कोठी के पहिने हुए कपडे पहिनने से-या उसकी पहिनी हुई मावा के पहिनने प्रत्यादि संसर्ग से निरोगी भी कोठी होता है.

प्रत्येक प्रकार के रोग के विषये आयुर्वेदीय ग्रन्थोंमें औषधियो पृथक् २ और अनेक प्रकार की है. उनमें भी अवरुद्धा वेदसे और अवाग्रह विचार कर कम वेश किया जाता है, जे केवल अनुभवों विहित कर सकते हैं. इससे अतिरिक्त अधिकांश औषधियां (जिनमें विष और रसो का प्रयोग है) ऐसी है, जिनका तयार करना सर्व साधारण के विषे सहज नहीं है और अशुद्ध होने पर बाध के अद्वे क्षानि होने का अधिक सम्भावना है.

आजकल दरबंगा कलकत्ता आदि अनेक स्थानोंसे सभायार पत्रोंके काव्रमों में कुष्ठ रोग पर औषधियां के नोटिस दृष्टिआयर होते हैं. जिनमें कोष्ठ एक माह हो वा तीन दिनोंमें आश्रम, कोष्ठ तीन बार लगाने से ही आश्रम, कोष्ठ जड़ की तरह रोग भगाने आदि का दावा करते हैं. और कोष्ठ मुक्त दवा तक देते हैं. इन नोटिसआगे नेही. लोगों का विश्वास इस पुष्पमय आयुर्वेद परसे उठा दिया है.

प्रसंगवशात् अन्य रोग जे संसर्ग से होते हैं उनको भी लिख देता हूं. जैसे उप-दंश, ज्वर, विशुचिका-यक्ष्मा, आंखका दुःखना-प्रणु, श्वेष्म, शीतला इनके समान अन्मान रोग भी एक दूसरे के शरीर में घुस जाते हैं. अतः जैसे रोगियोंसे सदा अथना याहिये.

कुष्ठ चिकित्सा में याद रखने योग्य निबन्ध कुष्ठ के पूर्व रूप नजर आते ही धवाज शुरु करना चाहिये. कथों के जन्म इससे रूप पूर्ण तौर से प्रकाशित हो जाते हैं, तब धवाज करना महा कठिन हो जाता है.

यह रोग अलिखित संज्ञाओं के अन्तः कुछ रोगी के लक्षणों के अनुसार निश्चित रूप से अपने अन्दर आने देना, उसके कपड़े पहनना, उसके साथ आना, भैरव आदि निशान की पुराणों का धनसे अथवा आह्वये और ध्यान कर्ता वैद्यों की उपस्थिति साधना रह कर ध्यान करना आह्वये और कुछ रोगी के आस कर के अकाल स्थानों की रचना कर ध्यान करना आह्वये।

वाताधिक्य कुछ रोगी के पहिले ही पिचाना आह्वये, कफाधिक्य कुछ रोगी के वमन कराना आह्वये और पित्ताधिक्य कुछ रोगी के विरेचन और रक्त मेषाणु कराना आह्वये।

दोषों का शोधन कर्म.

प्रति पक्ष में वमन कराना आह्वये।

प्रति मांस में विरेचन देना आह्वये।

तीसरे दिन नष्ट देना आह्वये।

और छठे महीने में इस्त पुखा कर थोड़ा रक्त निकलवाना आह्वये और समय समय पर धृतपान कराना इस कुछ रोग में अत्यन्त हितकर है।

कुण्ठी के कर्त्तव्य कर्म.

कुण्ठी रोगी हर आठवें दिन रात तथा नजो कटवाता रहे। हित औषधि सेवन करता रहे और स्त्री संसर्ग मांस और मदिरा का परित्याग कर देत्वग दोषों के वर्जितकर्म, शूल मनुष्य की त्वयामें दोष हो गया होवे, उसको धतूरे कर्म छोड़ देना आह्वये। मांस, वसा, दूध, दही, तैल, कुलथी, उडद, निष्पाव, धूप के विकार, गुड-शुक्र आदि विरुद्ध भोजन, अध्यशन, अशुद्धि, विद्याही और अलिखित दिनमें सोना और कसरत कुस्ती करना धर्त्यादि।

त्वग्दोष में कर्त्तव्य कर्म.

शाण्णी यावत्, सांड़ी यावत्, जै, जेहूँ, कोरहूय, उदालक आदि नक्ति अन्न का भोजन करे, भूय अथवा अडहर में से किसी एक के त्वग्दोष अथवा दावके साथ भोजन करे। मण्डूकपर्णी, आवयी, अडसा, वायविडंग और आक धनके दूधों की भी पकाकर अथवा सरसों के तैल में पकाकर अथवा तिकत वर्ग के साथ भोजन करे। नीमके पते अथवा मिखावां के मिखाकर भोजन करे। शूल मनुष्य के मांस गलतही अनुकूल होवे उसको जंगली शूलों का मांस भेदारहित देवे और अक्षय के द्विजे वृक्ष तैल, उत्तमान के लिये आरज्जुधादिका कवाथ देवे-पीने परित्येक और अवगाह में धेर का कवाथ देवे यह कुछ रोग में आहार और आचार का नियम है।

कुण्ठी चिकित्सा.

वात कुण्ठी चिकित्सा:—प्रथमही रोगी के स्नेह पान से शुद्ध कर फिर मेस-सिंगी, गोभर, काकजंघा, गिलोम और दशमूष धनसे सिद्ध किया हुआ तैल अथवा वी पान और अभ्यंगमें देता रहे।

पित्त कुण्ठी चिकित्सा:—क्षय अश्वकण्ठ, अश्वत्थाम, नीम, पित्तपापडा, सुखदरी, क्षोष और मण्ड धनसे सिद्ध किया हुआ वी पित्त वर्जित कुण्ठी में दिला है।

कई जन्मित कुष्ठ निमित्तः—चियास, शाल, अभसतास, नीम, सातवा, चित्रक
 कबीरिस्थ वन और कुट धनसे सिद्ध किया हुआ भी कई जन्मित कुष्ठ में हितकारी है।
 त्रिदोषण कुष्ठकी चिकित्सा—लिप्तावा, हरद और वायविडंग धन तिनों से सिद्ध
 किया भी त्रिदोषण कुष्ठों में देना अत्यन्त हितकर है कुष्ठों में अन्य प्रयोग।

मिलाकर.

- (१) हरद, त्रिकुटा, गुड, तैल, धन सभको यादने से कुष्ठ रोगमें शायदा होता है।
- (२) आंजला, हरद, जहेडा, वरी पीपल, वायविडंग, सहत भी सभको मिलाकर
 यादने से कुष्ठमें अवश्यही शायदा होता है।
- (३) एक माह तक साह हलदी यार तोडा दररोज गोमूत्र के संग पीने से कुष्ठ
 जाता रहता है।
- (४) चित्रक को गोमूत्र के संग महुन पिसकर सेवन करनेसे कुष्ठ आराम होता है।
- (५) पीपल को महुन पिसकर गोमूत्र के संग पीने से कुष्ठ में अवश्य शायदा होता है।
- (६) रसोतको गोमूत्र के साथ पीने तथा धसीका कुष्ठपर लेप करने से कुष्ठ रोग
 नष्ट होता है।
- (७) नीमकी छाल, सातवा, मोथा, दोनो हलदी, दोनो पंचमूल, मज्जठ,
 त्रिदोष, अड़सा, चित्रक, देवदार, त्रिकुटा और वायविडंग धन सभको समान भाग लेकर
 कपडछान करके चूर्ण कर लें। धूसरमें से प्रतिदिन जवा के अनुसार जानेसे कुष्ठ अवश्य
 ही जाता रहता है।
- (८) त्रिदोष धूतमें त्रिकुटा मिलाकर जानेसे कुष्ठमें आराम होता है।
- (९) गोमूत्र में जहेडे के साथ सिद्ध किया हुआ भी सेवन करने से कुष्ठ अवश्य
 भेव भिटता है।
- (१०) निसोथको सहत के संग जानेसे कुष्ठ को नाश करता है।
- (११) कर्दमर, और गूलर की जड़ धनको समान लेकर गूलर की जड़ के साथ
 कवाथ कर के पीवे धससे पुण्डरीक में अवश्य ही शायदा होता है।
- (१२) जटनी के दूधमें भीर जनाकर लम्बी मुहत तक सेवन करने से कुष्ठ रोग
 नाश होता है।
- (१३) जटके मूत्रमें वायविडंग मिलाकर सेवन करने से अवश्य कुष्ठ नाश होता है।
- (१४) भावयी दो भाग, त्रिदोषा एक भाग दोनो को मिलाकर कपडछाणु कर
 गोमूत्र के साथ सेवन किया जाय।
- (१५) गिलोयका कवाथ या उसी कवाथमें सिद्ध किया हुआ भी प्रतिदिन प्रातःकाल
 सेवन किया जाय।
- (१६) भरसारका चूर्ण अथवा भरसारका कवाथ अथवा भरसारके कवाथमें सिद्ध
 किया हुआ एकरीका भी प्रतिदिन प्रातःकाल सेवन कराने से कुष्ठमें अवश्य लाभ होता है।
- जन्म कुष्ठ रोगी के सम्पूर्ण दोष दूर हो जाय तब भर के कवाथ से रना करवे
 और भरसार के जल से भी सिद्ध किया हुआ यवागू पित्रावे।

(१७) कडे तैलमें शुद्ध गंधकका चूल्हा डालकर धूपमें जरा जर्म करके पान और भस्म करने से आमा कुष्ठ अवश्य नाश होता है. कमसे कम ४ दिन सेवन करना चाहिये. इस पर दूध युक्त भातका भोजन करे.

(१८) गोरामुण्डी का शुभ दिन लाकर छायामें सुभावे द्वि कपडछान कर २४ के तोला गाय के दूध के साथ ४० दिन तक अथवा तो एक वर्ष तक आमा कुष्ठ रोग अवश्य नाश करता है.

(१९) थूहरका दूध आधा शेर, जूने अने प तोला एक में मिलाय भरल कर अने परापर गोली बनावे, गलित कुष्ठवाले का पत्र देभकर एक वा दो गोली सेवन करावे.

(२०) रुद्रवन्ती का रविवार और पुष्य नक्षत्र के दिन पत्ता सहित छिपाड लावे, छायामें सुभाय, चूर्ण करके द्वि भसमें से प्रतिदिन प्रातःकाल में घृतमधु न्यूनाधिक लेके सेवन करे, इसके लार्ण होने पर दूध पान करना चाहिये—भसका सेवन करते समय नमक पन्ह करना चाहिये.

(२१) योपय्नीनी या वृक्षराज का चूर्ण कर छतना ही पैरसार का चूर्ण मिलाकर प्रातः और सन्ध्या के सहत में मिलाकर खाटे. भसमें ली लवण पन्ह है. कुछ समय तक सेवन करना चाहिये.

(२२) सुवर्णपत्री या सनाम का साइ करके कपडछान करके चूर्ण करे, भसके वजन का चौथा हिस्सा योपय्नीनी लेवे, दोनों का मिलाकर सवेरे तथा शाम के अथवा इकत शाम ही के कमसे कम ६ माथा एक एकत लेना चाहिये, उपर गौ का दूध पीवे. अधिक समय सेवन करने से बाल होता है.

(२३) नीम, लिहावा, वायविडंग, अदिर और आवयी छिप्राकत पांचो औषधि भस कुष्ठ रोगका नाश करने में रामचालु काम करती है.

(२४) नीम के गुलु आप सवर् पन्धुवर्ग अग्नि तरह से जगत है. भस कुष्ठरोग का मिटाने में पडाही उपयोगी नजर आया है.

(१) नीमका पंचांग—छाल, पत्ते, इलइल और जड इनको नीमका पंचांग कहते है. इस पंचांग का समान भाग लेकर, छायामें सुभावे द्वि कपडछान कर चूर्ण कर ले. द्वि भसमें से पत्रके अनुसार घी, सहत, गोभूत, जल, आमलोंका क्वाथ अथवा दूध के साथ सेवन करना चाहिये. यह नीम पंचांग उत्तम रसायन है.

(२) प्रतिदिन प्रातःकाल नीमका पत्ताका चूर्ण और आवयोंका चूर्ण मिलाकर सेवन करने से कुष्ठ रोग नष्ट हो जाता है.

(३) नीमका भट्ट शुभ दिन देभ कर पहिले कुष्ठ रोगी का वसन विरेचनादि कम यथाविधि कराकर ३ मासा सवेरे तथा ३ मासा शामके उत्तम शुद्ध मधुमें यटावे, भोजन के पहिले सेवन कराया जाय. और इसीको (भट्ट) वृक्षोंपर लगाया जाय. ३-४ मास तक सेवन करने से कुष्ठ का नाश होता है.

(४) निम्ब स्वच्छा कृतः क्वाथः सर्व कुष्ठ रोगनाशनः नीमकी अन्तरछाल का क्वाथ करके तीन अथवा ६ मास तक परापर पिनेसे समस्त कोट नाश होते है.

(५) नीमकी निम्बोलीका तैल कुष्ठ के धाव पर लगाने से अत्यन्त शायद होता है.

(२५) अमृत लवलातक प्रयोगः—शुद्ध लिखावे २५६ तोला १०२४ तोले पाणीमें पकावे, जल अतुर्थाश आकी रहे, तब कपडे से छान कर ठंडा करके २५६ तोले दूध मिलाकर पकावे, जल अतुर्थाश आकी रहे तब गरागर का घृत मिलाकर पकावे. जल घृत मात्र रहे जल तब अर्ध भाग शकर मिलाकर अच्छी तरह मथ कर सात दिन पका रहने दे, फिर सात दिन आठ प्रातःकाल शौयादि से शुद्ध हो कर २ भासा अथवा शैगी के पलके अनुसार सेवन कराया जय. इससे गलीत कुष्ठमें अलुत क्षय हो जाता है.

(२६) जिसके अंग को कीड़े आ गये हों उसको कनेरकी जड़ पीस कर लगावे. कुछ अथवा उपदंशका घाव कनेर की जड़को घिसकर लगाने से शीघ्र ही अच्छा होता है.

(२७) वायविडंग को गोमूत्रमें पीसकर लगावे, गोमूत्र से घाव घोता रहे और गोमूत्र शैगीको पिलाते रहना चाहिये.

(२८) नीला बोधा, हरताल, कुटकी, त्रिकुटा, लाज संहजना, कनेर, कूट, आवयी, थूहर, बोध, नीमके पत्ते, पीलू के पत्ते और अमलतास के पत्ते पाणी अथवा गोमूत्रमें पीसकर लेप करने से कुछ नाश होता है.

(२९) वायविडंग, कनेर, दोनो हल्दी, और दोनो कटेरी, धनको पीसकर लेप करने से श्वित्र नाश होता है, (श्वित्र नाशक अनुबूत प्रयोग).

(३०) कंज, आक के फूल, थूहर, अमलतास और अमेली के पत्ते धन सभको पत्ते गोमूत्रमें पीसकर लेप करने से श्वित्र, दद्रु, मण्ड ये सब नाश होते हैं.

(३१) श्वेत अपराजिता की जड़को उसीके रसमें पीसकर लेप करने से श्वित्र कुछ नाश होता है.

(३२) भंडाय, पुमांडके फीज, कूट, पीपर, धन सभको गरागर लेकर, अकर के मूत्रमें पीसकर लेप करने से श्वित्र कुछ नाश होता है.

(३३) करंज, आक, थूअर, और अमलतासके पत्ते दूध सभको गोमूत्रमें पीसकर लेप करे, श्वित्र को मिटाता है.

(३४) सरल देवदार के पीसकर श्वित्र पर लेप करने से मिटता है.

(३५) पाययी ओक तोला और हरिताल ४ तोला धनको गोमूत्रमें जूय भरल कर लेप करने से श्वित्र कुछ नाश होता है.

(३६) सरेह अरनीकी जड़को रवि पुष्पको बाकर दुधमें पीसकर पीने से श्वित्र को मिटाता है.

(३७) चिरमिडि के यूर्ण को पानीसे मलिन पीसकर लेप करने से श्वित्र मिटता है.

(३८) मनशिव और डंगा भरभको पानी में पीसकर लेप करने से श्वित्रका नाश होता है.

(३९) आवयी और कासे तिल धनका कलक अनाकर वर्षापर नियम से आने से तीव्र श्वेत कुछ भी अवश्य मिटता है.

(४०) आवयी का यूर्ण ओक तोला भर सदात के संग अथवा तो गरम जलके संग सेवन करे और घामका सेवन करे, दूध और घी आता रहे, श्वित्र कुछ अवश्य ही नाश होता है.

(४१) धूंधयी, कुट, चित्रक की जड़ और वय घनकी नीमके रसमें अथवा कांछमें पीसकर लेप करने से स्वित्रका नाश होता है.

(४२) आवयी, सिंदाूर, अंगूररस और चित्रक की जड़ घनकी पीसकर लेप करने से स्वित्रका नाश होता है.

(४३) दारुहल्दी और गूलर की मूलकी छावकी पीसकर लेप करने से स्वित्र मिटता है.

(४४) आवयी १६ तोला, हरिताल ४ तोला, मनशिश ६ भासा, धूंधयी ६ भासा और चित्रक की जड़ ६ भासा घन सज्जके गोमूत्रमें पीसकर लेप करने से स्वित्र कुछ नाश होता है.

(४५) छाथीदांत के साथ भावलीका क्षार पीसकर लेप करने से स्वित्रका नाश होता है.

(४६) कुत्तेकी हड्डी, केलेक क्षार, और कौआकी विष्ठा घन सज्जों में मिलाकर लेप करने से स्वित्र मण्डल में उग्र रक्त कुछ भी नाश होता है.

(४७) बोहयूर्यु, काले तिल, रसोत, आवयी और आवले सज्जके लांगरे के रसमें पीसकर लेप करने से स्वित्र कुछ आराम होता है.

(४८) आवयी के यूर्युमें अहरणका रस मिलाय लेप करने से उग्र जमा हुआ कुछ भी नाश होता है.

(४९) मुण्डी के रसका शरीरपर लेप करने से सर्व कुछकी पथ्या दूर होती है.

(५०) जेरभमुण्डी के यूर्युके रात्रे पाणीमें मिला कर सवेरे पानों में लगाने से वाक् कम होता है.

रस माण्डिक्यम.

(५१) अक्षपत्री हरिताल का पेठे के रसमें अर्धे हठी में सात २ बार शुद्ध करे, फिर घसके छोटे २ टुकड़े कर ले, पश्चात् घसके एक सिंकोरे में रणकर छपरसे दूसरा सिंकोरा ढंक घेरिके पत्तों का लेप कर देवे, फिर सुभाकर आंख में रण दे जय तक लाल न हो जय तय तक पकावे, जय शीतल हो जय तय अन्धर से रसको निकाल ले. मात्रा दो रती घी सहित न्यूनाधिक में देवे. पथ्यमें अनेकी रीटी, शक्कर, घी देवे.

तालकेधररस.

(५२) हरिताल का यूर्यु कर पमाउ और सुभंध वाले के रसमें भरल कर के पुटपाक करे, फिर एक दूध हांड़ी में घस औपधि को भरकर छपर और नीचे ढाक घी भरम रणकर दिन रात पकावे, जय सफेद हो जय और अग्नि में डालने से धूंधान निकले तय उसका सर्व रोगों प्रयोग करे, घसमें भरूर तथा अने की रीटी का पथ्य है.

विहयलारकर रस.

(५३) गंधक से मारा ताँप्रा १० लाग, मिरय ५ लाग, भीका तखिया २ लाग घनका यूर्यु कर अनुमान मुवाहिक पाने से सर्व कुछ नाश होता है.

हरिताल रस.

(५४) सवि पुष्प को राना कर अक्षपत्री को छिपाउ लावे, फिर किसी लुगदी कर उसमें शुद्ध वंशपत्री हरिताल रणकर मुलतानी मिट्टीसे कपड मिक कर के सुखावे, फिर

ખાંચ સેર ઉપલો ફૂંક દે, એક હી આંચમે શ્વેત ભસ્મ હોગા. ઇસકો પ્રભાવિધિ અનુપાન મુવાદિક સેવન કરને સે સર્વ કુષ્ટ નાશ હોતે હૈ.

હરિતાલભસ્મ વિધિ ૨.

(૫૫) હરિતાલ શુદ્ધ તોલા એક કો ઇન્દ્રાયણ કે એક ફલ મેં રખકે ચાર કપડ-મિટ કરકે સુખાય લે ફિર સવાસેર આરને ઉપલોં મે ફૂંક દેવે ઇસી તરહ ઇકવીસ ઇન્દ્રા-યાકે ફલોં મેં ફૂંકે. સેવન કરને સે સર્વ પ્રકારકા કુષ્ટ મિટે.

હરિતાલભસ્મ ૩

(૫૬) શુદ્ધ હરતાલ ૨ તોલા કો ઘી કુંવાર કે રસમેં દો દિન ખરલ કરે, ટિકિયા ખાંધિ સુખાય લે સન કે પતોં કી લુગદીમેં રખકર કપડમિટ કરકે ૩ સેર કન્ડોં મેં ફૂંક દે, ભસ્મ હોગા. અનુપાન મુવાદિક સર્વ કુષ્ટોં કો હટાતા હૈ.

શ્વેતાદિસ.

(૫૭) શુદ્ધ પારા ઓર શુદ્ધ ગંધક, ત્રિકલા, ભાંગરા, આવંચી, ભિલાવાં, કાલે તિલ નિખોલી, ચે સય સમાન ભાગ લે, ભાંગરા કે રસ મેં ખારખાર ભાવનો દેકરે સુકાતા રહે, એસે ઇકવીસ દિન તક કરકે પીછે સુખાય કર ખુબ ખરલ કરે, ખોરાક ૩ રતી રસકો સહત ઘી ન્યુનાધિક મેં મિલાકર ચાટને સે શ્વેત કુષ્ટ કો મિટાતા હૈ.

(૫૮) સુવર્ણ માલિક ભસ્મ કો અંશ કે અનુસાર રોગીકો સહત કે સાથ દેવે, ત્રિકુટા ઓર વાયવિંડમ બી જરા મિલાવે પથ્થ સે રહે, નમક બન્દ કર દે-કુચથી ન ખાય-ગેદૂ અને કી રોટી ઘી દૂધ કે સાથ ખાય.

(૫૯) શિલાજીત શુદ્ધ કો ૨ માસા ગોમૂત્ર મેં હરરોજ સવેરે સેવને કરે. કરોમ વર્ષ દો વર્ષ તક તો ચઢ પ્રયોગ કુષ્ટકો અવશ્ય મિટાતા હૈ.

(૬૦) સહતકો ખાસી જલમેં મિલાકર પાન કરને સે કુષ્ટ જન્ય અન્તઃદાહ દૂર હોતી હૈ.

વજ્રતૈલમ.

(૬૧) સાતલા, કંજ, આકકે ફલ, માલતી, કનેર, થૂદરકી જડ, સિરસકી જડ, ચિત્રક કી જડ, સારિવાકી જડ, વિષ, કલિહારી, અમ્રક, હીરાકસીમ, હરિતાલ, મનશિલ, ત્રિકુટા, ત્રિકલા, દોનો હલ્દી, સફેદ સરસોં, વાયવિંડમ ઓર પવાંડ ઇન સય કો ગોમૂત્ર મેં પીસ લે ઇનસે ચૌથાઈ તૈલ મિલાકર તૈલ કી વિચિ સેં તૈલ પકાવે ઇસીકો વજ્રતૈલ કહતે હૈ.

કૃષ્ણ સર્પ તૈલ.

(૬૨) મરેહુએ કાલે સર્પ કે શિર, કૂચ આન્ત ઇનકો છોડકર બાકી અંગોકો પાત્ર મેં રખકર એસી વિધિસે જલાવે કિ જીસમેં ધુવા પાત્રસે બાહિર ના નિકલે, જન્ય ભસ્મ હો જન્ય તથ ઉસમેં આવંચી કો તૈલ મિલાકર સિદ્ધ કર લે. શરીર પર માલિશ કરનેસે બાલિત કુષ્ટ કો નાશ હોતા હૈ.

(૬૩) કરવીર તૈલ—સફેદ કનેર કો પંચાંગ ઓર વિષ મિલાકર ગોમૂત્ર મેં લુગદી કરકે તૈલકી વિધિ સે તૈલ પકાવે, લેપ કરને સે કુષ્ટ રોગ નાશ કરતા હૈ.

कुष्ठ रोगस्य तैलम्.

(६४) पारा, गंधक, इट, सप्तपर्णी, चित्रक, सिन्दूर, लहसुन, हरिताल, आवय्यी, अभयतानाश के कीज, ताम्रजस्म, मनशिल, सप्त अकेक तोला लेवे कुडवा तैल उर तोला भिवाकर धूपमें धरि सिद्ध करे, माविश करने से कुष्ठ रोग को नाश करता है.

(६५) काले सर्प के अन्तर्धूमकी रीतिसे जलाकर जस्म बना लेवे-और जले के तैल निकाल कर दोनों का अच्छी तरह भिवाकर लगाने से श्वित्र तथा सर्व कुष्ठों को दूर करता है.

श्वित्र पञ्चानन तैलम्.

(६६) कडवा तैल ४ सेर कवाथ के बिये जौमूत्र, इलीका तोड गायका दूध, और भकरीका दूध प्रत्येक चार चार सेर कडक के बिये अरण्ड के पीज, तुलसी के पीज, आवय्यी, पमार के पीज, कडवी तुरीया के पीज, पीपल, अंकोल, मनशिल, क्षीराकसी, हरडे, कूठ और वायविडंग ये सप्त अके सेर धन सप्तके अकेत्र कर पका ले, इस तैलका माविश श्वित्र पर करने से नाश होता है.

उन्मत्ततैलम्.

(६७) धतूरे के पीजने का कडक और मानकन्द के क्षारका जलक्षारो कडवा तैल पका कर लेप करने से क्षुद्र कुष्ठ मिटते है.

भस्त्रिध तैलम्.

(६८) काली भिरय, निसोत, कूठ, हरिताल, मनशिल देवदारु, दोनो हल्दी, आलु, अंजन, धन्नायलु, आकका दूध और गोबरका रस प्रत्येक अके अके तोला, विष २ तोला, तिलका तैल ४ तोला, कडवा तैल धन सप्तोका आठवा भाग जौमूत्र में पकावे, जल तैल मात्र रह जल, तप्त ठंडा करके इसका माविश श्वित्र तथा कुष्ठों पर करने से नाश होता है.

सोमराज तैलम्.

(६९) आवय्यी, दोनो हल्दी, सरसो, कुठ, करंज के पीज, पमाड के पीज, अभय-तास के पत्ते, धन सप्तों का कडक के द्वारा सरसो के तैल को पकाकर प्रलेप कर ले.

(७०) आवय्यी के पीजने का पीस कर माजलु तथा सहत में भिवाकर तडके अनुपान के साथ सेवन करने से श्वेत कुष्ठ मिटता है.

(७१) आरुण्यवाहि तैलम् - अभयतानाश धाय के पुल, इट, हरिताल, मनशिल, दोनो हल्दी, धनमें तैलको सिद्धकर के लेप करने से श्वित्र शीघ्र ही नष्ट होता है.

(७२) हाथीकी लीह (विष्ठा) की जस्म उर सेर लेकर हाथीके मूत्रमें २१ बार नितारकर छान लेवे वह क्षार जल ६४ सेर लेवे फिर इसमें ६ सेर आवय्यी का भिवाकर पकावे जल पकते पकते गढा हो जल तप्त उतारकर गोलीयां बना लेवे, पानीमें भिसकर लगाने से कुष्ठ और श्वित्र दोनों को नष्ट करता है.

(७३) सोमराज तैलम्.

आवय्यी १६ तोला, जैरसार ४ तोला, परवणकी जल अके तोला, हरडे अके तोला,

બહેડા એક તોલા આંવલા એક તોલા, ધમાસા એક તોલા ઓર કુટકી ૧ તોલા ઇન સખકો પાનીકે સાથ પિસકર ૮ તોલા શુદ્ધ ગુગુલુ મિલા દે ફિર કંઈકેસે ઔયુન ઘી, ઘીસે ઔયુના પાની તથા ઉપરકી લુગદી સમોંકો એકકર મંદામિંસે પકાવે જમ ઘીમાત્ર રહ જમ જાન લો ઇસકે સેવન સે રિવતકો શીધ હી નષ્ટ કરતા હૈ.

(૭૪) પગ-ચતિકાધૂત-નીમ, પરવત્ર, કુટકિ ગિલોય ઓર અડસા ઇન સખકો ૫-૫ તોલા લેકર ૨ સેર પાનીમેં કવાથ કરના, જમ આધાસેર પાની રહ જમ જાન લો, ફિર આધા-સેર ઘી ઓર આધા સેર ત્રિફલા કી પિસી હુઈ લુગદી મિલાકર પકાઓ, જમ ઘી માત્ર રહ જમ જાન લો ઇસમેસે એક યા દો તોલે નિત્ય ખાને સે સર્વ કુષ્ઠમેં લાભ હોતા હૈ.

લઘુમંજીષ્ઠાદિ કવાથ.

(૭૫) મંજીષ્ઠ, હરડે, બહેડા, આંવળા, કુટકી, વચ, દેવદાર, હલ્દી, ફૂટ ઓર નીમ ઇનકા કાઠા બનાકર નિત્ય પિનેસે સખ તરહકે કુષ્ઠ આરામ હોતે હૈં.

(૭૬) બૃહ-મંજીષ્ઠાદિ કવાથ, મંજીષ્ઠ, કુટકી જાલ, ગિલોય નાગરમોથ, બચ, સોંઠ, દોનો હલ્દી, કટેરીકા પંચાંગ, નીમ, પરવત્ર, કુટકી, લારંગી, વાયવિડંગ, ચીતા, ચૂરનહાર, દેવદાર, બાંગરા, પીપર, ત્રાયમાણ, પાઠ, સ્તાવર ખેર, હરડે, બહેડા, આંવળા, ચિરાયના, બકાન, વિજયસાર, અમલતાસ, કુન્નપ્રિયંગુ, બાવચી, લાલચન્દન, બરણા, દન્તી, સિહોડા, પિતપાપડા, સારિવા, અતીસ, ધમાસા, ઇન્દ્રાયણ, ઓર સુગંધવાલાં ઇન સખકા કાઠા પીનેસે પુરાને ચર્મવિકાર, ૧૮ પ્રકારકે કુષ્ઠ, વાતરકત વિગેરે નાશ હોતે હૈં.

એક વિશત્તિક ગુગુલુ—

(૭૭) ચિત્રક, ત્રીફલા, સોંઠ, પીપલ, જીરા, કલોંજ, વચ, સેન્ધવ, અતીસ, ફૂટ, ચમ્બ, ઇલા-ચચી, જવાસા, વાયવિડંગ, અજમોદ, નાગરમોથા ઓર દેવદાર ઇન સખોંકો બરાબર લેકર પીસ કપડજાન કર, ફિર સખકી બરાબર શુદ્ધ ગુગુલુ લેકર ઇસમેં મિલા દો, ઘી કાલકર ખૂબ ઘોટોઘુટ જાને પર-દો-દો-માસકી ગોલીયાં બના લો, પ્રતિદિન પ્રાતઃકાલ ગરમ પાણી કે યા દૂધકે સાથ અગ્નિબલકે અનુસાર સેવન કરે, સર્વ પ્રકારકે કુષ્ઠોકો નાશ કરતા હૈ.

આરગ્વધાદિ કવાથ:—

(૭૮) અમલતાસ, મૈનફલ, કકોટી, કુડા, પાઠ, ખેરપાઠર, મૂખા, ઇન્દ્રજી, સપ્તવર્ણી, નીમ, દોનોં પિયાવાંસે, ગિલોય, ચિત્રક, કાકજંઘા, દોનોં કંજે, પરવળ, ચિરાયના ઓર કરેલા— ઇન સખોંકો સમાન ભાગ લેકર કવાથ ક્રિયા જમ, સેવન કરને સે કુષ્ઠ રોગકો નષ્ટ કરતા હૈ.

ગંધક રસાયનમ

(૭૯) શુદ્ધ ગંધકકો ગોલે દૂધકી બાવના દેકર ચતુર્જાત, ગિલોય ત્રિફલા, સોંઠ ઓર બાંગરા ઇનકે રસકી અથવા કવાથકી આઠ આઠ બાવના દે, ફિર અદરખ કે રસકી આઠ બાવના દેવે, ફિર સુખામ કે બરાબર કી મિશ્રી મિલાવે. તો મહ ગંધકરસાયન સિદ્ધ હોતા હૈ. ઇસમેં સે ૧ તોલા નિત્ય સેવન કરે તો મનુષ્ય વીર્ય, પુષ્ટી, હલ્દેહ, દીપ્તશિખાન હો, ઓર કુષ્ઠ, ખુજલી, ઘોર અતિસાર, સંગ્રહણી, વાતરકત, શ્વેત, જીર્ણીકર, પ્રમેહ ઓર વાતકે સર્વ વિકાર મિટે.

(૮૦) કુષ્ઠિનાં વિષજુષ્ઠાનાં શોષિનાં મધુમેહિનામ્ ।

ત્રણાઃકૃત્ત્રેણ સિદ્ધયન્તિ લેપાં ત્રાપિ ત્રણેત્રણાઃ ॥

કુષ્ઠરોગી, વિષરોગી, ક્ષયરોગી, સંધુમેહિ રોગી એસે રોગીયોંકાં ઓર જનકે વ્રથુમેં વ્રથુ ઉત્પન્ન હો ગયા હો એસે મનુષ્યોંકાં વ્રથુ અત્યન્ત કષ્ટસાધ્ય હૈ.

(૮૧) જલપાનમ્—જો મનુષ્ય નિત્ય રાત્રિકે અન્તમે વિધિપૂર્વક જલપાન કરતે હે જનકે આંસી, શ્વાસ, અતિસાર, જ્વર, કઠિરોગ, કુષ્ઠરોગ, મૂત્રાધાત, ઉદરરોગ, અર્શ, સૂજન, ગલરોગ, શિરોરોગ, શ્લેશ્મરોગ, નેત્રરોગ, વાત, પિત્ત, ક્ષય ઓર કફસે ઉત્પન્ન યે સખ રોગ નષ્ટ હો જાતે હે.

ચોગસારામૃત.

(૮૨) સતાવર, ગંગેરન, વિધારા, ઉટંગનકે બીજ, પુનર્નવા, ગિલોય, પીપલ, અમ્લ-ગંધ, ઓર ગોખરૂં યે પ્રત્યેક ચાલીસ તોલા લેકર ઇનકા બારિક ચૂર્ણ બનાવે, ફિર સખકા આધા ભાગ ખાંડ મિલાવે, સખકો ખૂબ મર્દનકર ફિર ઉસમેં ૧૨૮ તોલા સહત ઓર ૬૪ તોલા ધૂત તથા, તજ, તેજપત્ર ઓર ઇલાયચી ઇનકા ચૂર્ણ ચાર ચાર તોલા મિલાકર એક દૃઢ વાસન મેં બર રખે; રોગીકો અપની જઠરાગ્રિકે બલાનુસાર ખાના ચાહિયે ઓર યથેષ્ટ બોજન કરે, ઇસસે કુષ્ઠ, વાતરક્ત, પિત્ત તથા રશ્મિરજન સર્વ રોગોંકાં દૂર કરતા હૈ.

(૮૩) ગુડ્યૂધૃત મ્—ગિલોયકા ક્વાથ ઓર સોંઠકા કદક ડાલકર મૃદુ અમિસે પકાય લી સિદ્ધ કરે, યહ ધૂત કુષ્ઠ, વાતરક્તકો નાશ કરતા હૈ.

(૮૪) ગીલોય કફ તથા વાયુકો દરનેવાલી હૈ. કફ તથા મેદકો સુખાને વાલી હૈ. વાતરક્તકો કો સમન કરને વાલી, ખુજલી તથા વિસર્પકો દરને વાલી હૈ ઇસ લિયે ગિલોયકા ક્વાથ, સ્વરસ, કદકકો, ચૂર્ણકો અથવા સત્વકો બહુત દિનોં તક સેવન કરે તો કુષ્ઠ ઓર વાતરક્તસે મુક્તિ હોતી હૈ.

પંચનિમ્બકાવલેહ

(૮૫) નીમકા પંચાંગ—(ફલ, ફૂલ, જાલ પત્તે ઓર જડ પ્રત્યેક દો દો તોલે) લેકર બારિક ચૂર્ણ બનાવે ઇસ ચૂર્ણકો ભાંગરે કે રસકી સાતગ્ગર ભાવના દેવે. હરડે, બહેડા, આંબલા, સોંઠ, મિરચ, પીપર, આલિ, ગોખરૂં, બિલાવા, ચિત્રક, વાયવિઙંગ, વરાહીકન્દ લોહચૂર્ણ, દોનોં હલ્દી, બાવચી, અમલતાસ, મિથી, ફૂંડ, ઇન્દ્રજી ઓર પાંદયે સખ સમાન ભાગ લેકર ચૂર્ણ કરલે, ઇસ ચૂર્ણકો, ખેર-વિજયસાર ઓર નીમ ઇનકે ગાઢ ક્વાથકી ભાવના દેવે. પશ્ચાત્ત ભાંગરેકે રસકી કમાનુસાર સાત ભાવના દેવે, ફિર ઇસ હરડે આદિ ચૂર્ણકા એક ભાગ પૂર્વોક્ત, નિમ્બચૂર્ણકા દો ભાગ લેકર ઇન સખકો એકત્ર કરલે, ફિર શુભ દિન દેખ કર, વમન વિરેચન આદિસે શરીરકો શુદ્ધ કરકે, પશ્ચાત્ત સ્નેહન ક્રિયાસે સ્નિગ્ધ કરકે રસ અવલેહકા, સહત-પંચતિક્ત ધૂતમેં, વા ખેરકે તથા વિજયસારકે ક્વાથમેં અથવા ગરમ જલકે સંગ ચાટે અથવા પાન કરે ઇસ પરહિત કારક અન્નકા બોજન કરે, ઇસસે સર્વ પ્રકારકે કુષ્ઠ, ગણ્ડમાલા-વાતરક્ત, ભગન્દર ઓર સર્વ પ્રકાર પ્રમેહ-યે સખ ઇસ નિમ્બકાવલેહ સે નષ્ટ હોતે હૈ.

(૮૬) જો મનુષ્ય એક મહીને તક નિત્ય ભાંગરેકે રસકો પિયે ઓર દૂધ લાતકા બોબન કરે તો સમસ્ત રક્તકે વિકાર નષ્ટ હોતે છે. શરીરમેં અત્યંત બલ બદે.

સર્વાંગ સુન્દરી ગુટિકા.

(૮૭) એક સહસ્ત્ર બિલાવે, ત્રિફલા કે જલમેં ડાલે ઓર ૧૦૨૪ તોલે જલમેં પકાવે જળ્ય ઔથાઈ શેષ રહ જળ્ય તળ્ય ઉસે ૪૦ તોલા મિશ્રી ડાલે, ૪ તોલા સોઅરખનિ લે ઓર ૪૦ તોલા ગૂચલ ડાલે. ખેરસાર, નીમકી છાલ, મજીડ, ખિજેરા, ઇન્દ્રાયન, ચિત્રક, દોનોં હલ્દી, હરડ, દેવદાર, ભારંગી, મહ સખ ઔષધી દો દો તોલા લે ઉપર કી આસનીમેં ઝંઘ કર બરાબર ગુટિકા તપ્યાર કરે. ઇસકો પ્રતિદિન બલકે અનુસાર ખાય ઓર પથ્થસે રહે તો સર્વ પ્રકારકે કુબોં કે દૂર કરે !

(૮૮) બાવચી, ગળાસત્વ દોનો કો સમભાગ લેકર સહત અથવા પાનીકી સંગ રાતકો સોને કે બકત સેવન કરે. માત્રા દોનોકી દો દો માસા લે.

(૮૯) બાવચી, અપામાર્ગ દ્વાર, ભાંગરા, ચીત્રક, ઇનકો સમભાગ લેકર પાનીકી સાથ આધા ઘંટા ખુબ મહીન પ્રીસકર સફેદ ચટ્ટો પર લેપ કરે. લેપ કરને કે દો દીન બાદ ચમડી ઉપર છાલે પડતે હેં. ઓર તીસરે દીન પાની નીકળતા હે. વો પાણી દુસરી જગા પર ન લગ જાવે અથવા દૂસરે મનુષ્યકો ન લગ જાવ ઇસકા ખાસ ધ્યાન રખા જાવે. ઉપરકી સ્થિતિ આઠ દીન રહેતી હે ફિર અપને આપ નથી ચમડી આતી હે ઓર પૂરાની નીકળ જાતી હે. ઇસ આઠ દીન કે અરસે મે દવા લગાના બંધ કર દે ઓર રોગીકો આરામ કરને દે. ઇસસે ઇલાજ કરતા વૈદ્ય અથવા દરદી દોનોકું ગભરાને કી કોઇ આવશ્યકતા નહીં, ફિરસે દવા લગાના શરૂ કરે. દૂસરી વખત ચટ્ટો ઉપર છાલે નહીં પડેંગે, જળ્ય તક ચમડીકા રંગ કુદરતી ચમડીમેં મીઠ ન જાવ તળ્ય તક દવા લગાના ઓર ખાના શુર રખના ચાહીએ.

વૈદ્યકો ખાસ ચાદ રખનેકી બાત.

જીસ રોગીકા સર્વ શરીર સફેદ હો ગયા હોવે તો ઉસકે સખ શરીર ઉપર એક સાથ દવા નહીં લગાઇ જાવ, એસા કરને સે રોગીકા મહાન કષ્ટ ભોગવના પડતા હે. ઓર દરદી કબી મર બી જાતે હેં. ઇસ લિયે એસે રોગીકે પહિલે કિસી એક અંગ પર દવા લગાઇ જાવ, જળ્ય વો અંગ ઠીક હો જાવે તળ્ય દૂસરે અંગ ઉપર દવા લગાઇ જાવ. સમય જાદા ખર્ચ હોઆ પરંતુ શીઘ્રતા કબી ન કરે. કમ સે કમ ત્રીન માસ ઓર છ માસ દવા અવશ્ય હી સેવન કરની ચાહીએ. જીસ દરદીકો ૩૦-૪૦ વર્ષકો પુરાની બીસારી હોવે ઉસકો સાલ દો સાલ તક દવા સેવન કરાતે રહે. ઇસમેં ખાસ પથ્થ તેલ, ખટાસ, ગુડ ઓર બલ્લચર્ચસે રહેના. રૂતિ.

વૈદ્યરાજ એસ. એમ. શર્મા,
અમદાવાદ.

